गुरु नानक – सबद ६६

आपे रसीआ आपि रसु आपे रावणहारु ॥

रागु सिरिरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २३

आपे रसीआ आपि रसु आपे रावणहारु ॥
आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतारु ॥१॥
रंगि रता मेरा साहिबु रवि रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥
आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु ॥
आपे जाल मणकड़ा आपे अंदरि लालु ॥२॥
आपे बहु बिधि रंगुला सखीए मेरा लालु ॥
नित रवै सोहागणी देखु हमारा हालु ॥३॥
प्रणवै नानकु बेनती तू सरवरु तू हंसु ॥
कउलु तू है कवीआ तू है आपे वेखि विगसु ॥४॥२५॥

सार: अद्वैतवाद एक दार्शनिक दृष्टिकोण है जो यह मानता है कि सभी वास्तविकताएँ मूल रूप से एक ही हैं, सब कुछ एक ही स्रोत से उत्पन्न हुआ है और हर चीज़ में परस्पर संबंध है। इसके विपरीत द्वैतवाद, वास्तविकता को अलग-अलग हिस्सों में बाँटता है जैसे अच्छाई और बुराई। अद्वैतवाद ऐसे किसी भी भेद को नहीं देखता है और कहता है कि वह सर्वव्यापी शक्ति ही है जो प्रेम करने वाला प्रेमी है और वही प्रेम पाने वाली प्रेमिका भी, वही खोजने वाला साधक है और वही है जिसकी खोज की जा रही है। जब हम इस सत्य को पहचान लेते हैं तब हमारे अंदर दूरी के अलगाव का अहसास मिट जाता है और हम उस अनन्त, दिव्य आनंद के शाश्वत प्रवाह के साथ एक हो जाते हैं जो एकता से उत्पन्न होता है।

आपे रसीआ आपि रसु आपे रावणहारु ॥
सर्वव्यापी ऊर्जा ही देखने वाली वो समीक्षक है जो सृजन का आनंद लेती है। यह समीक्षा ही है जो अस्तित्व के सार को मूर्त रूप देती है। यह प्रत्येक क्षण का उपयोग और अनुभव करती है।

आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतारु ॥१॥

सर्वव्यापी ऊर्जा ही शादी का वस्त्र, सुहाग की सेज और वही प्रियतम है। यह ऊर्जा स्वयं को सृष्टि के सृजन में व्यक्त कर, पालन-पोषण के माध्यम से अपनी उपस्थिति दिखाती है । यही सार्वभौमिक संबंध का स्रोत है। (१)

रंगि रता मेरा साहिबु रवि रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥

पूर्ण सुख से भरपूर मेरी सर्वोच्च सर्वव्यापी ऊर्जा हर चीज़ में ज़ाहिर हो कर समस्त अस्तित्व को समृद्ध करती है। (१)(विराम)

आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु ॥

सर्वव्यापी ऊर्जा ही मछुआरा है और मछली भी। वही जल और जाल भी, मतलब अदृश्य सर्वव्यापी शक्ति दृश्यित भी और वही अदृश्य भी है।

आपे जाल मणकड़ा आपे अंदरि लालु ॥२॥

सदैव विद्यमान ऊर्जा जाल भी है और चारा भी है। यह दर्शाता है कि सर्वव्यापी अदृश्य शक्ति सभी कार्यों के पीछे का प्रेरक स्रोत है। (२)

आपे बहु बिधि रंगुला सखीए मेरा लालु ॥

सर्वव्यापी ऊर्जा के पास स्वयं को मूर्त रूप देने के कई तरीके हैं, यही मेरी मित्र है और यही प्रियतम भी है।

नित रवै सोहागणी देखु हमारा हालु ॥३॥

सुहागन सी निरंतर एकता की अवस्था बनाए रखने की मेरी आकांक्षा है क्योंकि मैंने स्वयं विराह की स्थिति देखी है। (३)

प्रणवै नानकु बेनती तू सरवरु तू हंसु ॥

नानक सर्वव्यापी शक्ति से विनती करते हैं कि तुम ही असीम सरोवर हो और हंस भी यानी तुम ही ज्ञान के स्रोत हो और साधक भी।

कउलु तू है कवीआ तू है आपे वेखि विगसु ॥४॥२५॥

सर्वव्यापी ऊर्जा ही दिन में खिलने वाला कमल और रात में खिलने वाली कुमुदिनी है, वह स्वयं को देखकर सृष्टि के विकास का आनंद लेती है। यह रूपक आत्म-प्रतिबिंब के प्रति आनंद की अभिव्यक्ति है। (४)(२५)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि एकता का अभाव या अलगाव को पहचानना एकता की तरफ़ बढ़ने वाला पहला कदम है। उनका मानना है कि अलगाव एक भ्रम है, हमारा सच्चा स्वभाव एकता ही है। लेकिन मन और अहंकार ऐसी बाधाएँ पैदा करते हैं जो हमें इस सच्चाई को समझने नहीं देते। अलगाव के खतरों से अवगत, गुरु नानक एकता को अपनाने और एकता के आनंद को अनुभव करने के लिए निरंतर आत्म-चिंतन बनाए रखने का प्रयास करने की गुज़ारिश करते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com